प्रातःक्लास ओमशांति 28.1.68

ओमशांति। रुहानी बच्चों को रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। बेसमझों को समझानी देनी होती हैं जब तक पूरा समझदार बन जावें। अभी तुम्हारे पास प्रदर्शनी वा म्यूजियम में आते हैं ;क्योंकि दलदल अथवा दुब्बन में फंसे हुए हैं ना। बुलाते भी हैं पतितों को आकर पावन बनाओ और विश्व में शांति भी चाहते हैं अर्थात् नई सतयुगी राजाई, नई दुनियां ही चाहते हैं। बच्चे जानते हैं नई दुनियां सो ही पुरानी होती है। पहले2 वहां से जो आत्माएं आती हैं वह पवित्र हैं। झाड़ से सरा मालूम पड़ जाता है। पिछाड़ी में जो नये2 पत्ते निकलते हैं ,देखने में बड़े ही सुंदर होते हैं। पुराने पत्तों से सुंदर तो जरूर हैं। अनेक धर्मों में आते रहते हैं। उनका कुछ मान रहता है ;क्योंकि पहले2 उन्हों को सुख देखना है। झाड़ तो जड़जड़ीभूत हो गया है। झाड़ पहले तो छोटा होता है। पीछे एडीशन होते2 बड़ा हो जाता है। यह भी समझाया जाता है कि झाड़ का फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। झाड़ बहुत ही पुराना हो गया है। फाउंडेशन का नाम–निशान नहीं। सिर्फ चित्र है। और धर्मों की ऐसी गति नहीं होती है। बुलाते हैं इस दुबन से निकालो। बाप भी समझते हैं बच्चे तुम दलदल में फंस गये हो तो जरूर दुःखी होंगे। निकलने का रास्ता ही नहीं जानते। कहां यह वैश्यालय की दलदल, बदबुयें। कहां शिवालय की खुशबुयें, बगीचे। यह है कांटों का जंगल। तो बुलाते हैं बाबा इसको आकर चेंज करो। बाबा कहते रहेंगे। सभी आत्माएं बाप को बुलाती हैं ;क्योंकि दलदल में पड़े हैं ना। यहां भी बहुत प्रदर्शनी अथवा म्युजियम में कोई आते हैं तो प्यार से उनको कहना है भले पधारे। जैसे शादी होती है तो निमंत्रण दे बुलाया जाता है ना। खुशी से आते हैं। अभी तुम सभी बरबादी में हो। बाप आकर आबादी में ले जाते हैं। तो जब कोई आये उनसे पूछना चाहिए तुम क्या चाहते हो?दिल में क्या विचार कर आये हो? बोर्ड पर देखो क्या लिखा हुआ है गेटवे टू हेविन। तो हैविन में जरूर विश्व में शांति होगी। हेल में विश्व में अशांति होगी। तुम क्या चाहते हो? विश्व में शांति के लिए ही बुलाते हैं। पतितों को पावन बनाने वाले आओ ;क्योंकि दुःख बहुत आ गया है। इसलिए जास्ती पुकारते हैं। बाप को तो हंसी आती है यह बिचारे दुब्बण में फंस पड़े हैं। पुकारते ही आते हैं। दुब्बण में फंसते जाते और पुकारते आते। निकलनले की कोशिश करते हैं तो और ही अंदर फंसते जाते हैं। नाटक देखने में खुशी होते(होती) है ना। बाप को भी खुशी होती है। मुझे ड्रामा के प्लैन अनुसार बुलाते हैं। उन्हों की बुद्धि में खुशी नहीं है। तुम बच्चे ही जानते हो कि बाबा आया हुआ है। हमको दलदल से निकाल रहे हैं। बाप बहुत ही सहज बात बताते हैं। यह है ही सहज ज्ञान और सहज योग। टीचर से याग और पढ़ाई। इसलिए इनको पाठशाला भी कहा जाता है। वह तो झूठी पाठशालायें हैं भक्तिमार्ग के। यह भी खेल है। बाबा जानते हैं इस चक्र को फिरना ही है। मुझे आकर सभी को ले जाना है। बाप जानते हैं हम बहुत ही बार आये हैं सभी को दलदल से निकालने। जो कल्प पहले निकले थे वही निकलेंगे। जरा भी फर्क नहीं हो सकता। ड्रामा है ना। तुम्हारी आत्मा पतित बन गई है। यहां पावन आत्मा तो कोई हो न सके। इस समय जबकि मैं आता हूं तो उपर में जो आत्माएं आती हैं थोड़ी महिमा निकली और खलास। जैसे मच्छर जन्मे और मरे। पिछाड़ी में आते हैं ना। पार्ट ही बहुत थोड़ा है। इतनी महिमा है नहीं। बाप खुद समझाते हैं मुझे कल्प2 बुलाते हैं। यह सारी पतित दुनियां अभी बदली भी होनी ही है। तो माया का अपोजिशन भी है। आधा कल्प है रावण का राज्य। मैं सर्वशक्तिवान ऑलमाइटी अथॉर्टी हूं। वह भी कम थोड़े ही हैं। भक्ति का कितना भभका है। बाप आकर सभी वेदों–शास्त्रों को खन्डन कर देते हैं। कितनी सामग्री है भक्ति की। अभी तुम बच्चे समझते हो कैसे भक्ति करते2 नीचे उतरते आये हैं। चढ़ने का तो है नहीं। उतरने में कितना समय लग जाता है। बाप को बुलाते हैं हमारी चढ़ती कला करो। बाप तो एक ही

बार आवेंगे ना। आते भी वानप्रस्थ अवस्था में हैं ला मुजीब। इनके बाद ही फिर यह रसम भक्तिमार्ग में (चलता)है। 60वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। कहते हैं ना साठ लगे लाठ। दुनियां को लाठ लगाय चलो वानप्रस्थ में। आगे वानप्रस्थ के बहुत आश्रम होते थे ;परंतु उनका अर्थ तो कुछ भी समझते नहीं। बस, बूढ़ा हुआ तो गुरू करना चाहिए। गुरू करते हैं मुक्ति में जाने लिए। गंगा स्नान आदि बहुत करते हैं। उन्नति तो कुछ भी होती नहीं। गिरते ही आते हैं। तुम्हारे कहने से गुस्सा भी आवेगा। यह विघ्न तो पड़ेंगे। नथिंग न्यू। कल्प2 होता ही है। खुद पुकारते हैं तो आत्माओं को पवित्र बनाना पड़े ना। सन्यासी तो कह देते हैं आत्मा निर्लेप है। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुद्धि बन गई है। यह सभी जंगले के कांटे हैं ना। मुसलमान लोग भी खुदाई बगीचे का साक्षात्कार करते हैं ना। आगे एक था, कहता था हम खुदा बगीचे में गया। खुदा ने हमको फूल दिया। यह भी ड्रामा में नूंध है। जो भी पास्ट हुआ बाप कहते हैं ड्रामा। अभी तुम नजदीक आते–जाते हो। बाप जानते हैं जो भी सब आत्माएं हैं सबको वापस ले जाना है। हिसाब–किताब चुक्तू होना है। फिर नया ड्रामा शुरू होगा। यह भी समझाया है आत्मा कितनी छोटी और अविनाशी है। ड्रामा भी अविनाशी है। बेहद के बाप जानते हैं अभी सारी दुनियां के आत्माओं को वापस जाना है। कितने ढेर आत्माएं हैं। सभी अपने2 सेक्शन में चले जावेंगे। फिर आकर पार्ट बजाना है। जैसे नम्बरवार आये हैं जब जाना है। बच्चे जानते हैं इतने ढेर आत्माओं को बाबा कैसे ले जावेंगे? हमको कैसे पढ़ाते हैं? बाप बिगर तो कोई राजयोग सिखा नहीं सकता। ऐसा हमारा बाबा है। लव जाता है ना। कितना बड़ा बाबा है। कितना बड़ा काम करते हैं। कैसे सारे विश्व को गोल्डेन एज में ले जाते हैं। बाबा ने अनेक बार यह कार्य किया है। कमाल है बाबा की। कितना हमको उंच बनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तेरे सब दुःख दूर हो जावेंगे। इनकी दवाई एक ही है। दूसरी दवाई है नहीं, जो चेंज की जावे। पतित–पावन भी मुझे ही कहते हैं। मैं आकर समझाता हूं तुम पतित बने हो जरूर। यह दुनियां ही पतित है। यथा राजा–रानी.....सभी जड़जड़ी भूत अवस्था को पाये हुए हैं। ड्रामा अनुसार दुनियां पुरानी होनी ही है। पतित दुनियां को कांटों का जंगल कहा जाता है। अभी तुम बच्चे ड्रामा को तो जान गए हो। सभी का पार्ट अलग2 है। नम्बरवार तो होते ही हैं। राजाई में भी उंच पद पाने लिए तुमको पुरुषार्थ कराया जाता है। यह नालेज ही राजयोग की है। टीचर तो जरूर चाहिए ना, जिससे योग लगावे। पहले बाप का बच्चा बनते हैं फिर पढ़ते हैं। फिर मुक्ति–जीवनमुक्ति को पाते हैं। तुमको बाप,टीचर,गुरू तीनों ही मिले हैं। यह भी बच्चे जानते हैं बाप को याद करने सिवाय हम प्योर तो बन नहीं सकेंगे। जन्म–जन्मांतर का सर का बोझा है। कल्प पहले भी बाबा ने ऐसे कहा था कि मामेकम् याद करो। पवित्र होकर ही जाना है। नहीं तो फिर सजा खाकर ही जाना होगा। पावन होने का युक्ति बताता हूं तो पुरुषार्थ करना है....। दिन–प्रतिदिन गुह्य बातें सुनाते रहते हैं। आत्मा भी कितनी छोटी बिंदी है। फिर कहते हैं अपन को आत्मा समझो। तुम्हारा बाप भी ऐसा ही बिंदी है। खुद तो राजाई नहीं करते हैं। तुमको दलदल से निकालने वाला कोई तो चाहिए ना। सो तो जरूर एक ही होगा। 10/20 तो नहीं हो सकते। भूल–भुलईया (में) भी एक खड़ा रहता है रास्ता बताने लिए। भगवान को भी यहां आकर रास्ता बताना है। तुमको थोड़े ही कहा जाना है। पहाड़ी थोड़े ही है जो कोई कहां से कोई कहां से जावेगा। वह तो समझते हैं सभी शास्त्रों से भगवान मिलने का रास्ता मिलता है ;परंतु वह सब पढ़ते2 आत्मा तो पावन बनी नहीं है। पतित आत्मा कैसे हुई? पतित आत्मा कैसे जावेगी? अभी बच्चे समझते हैं बरोबर बाबा आया हुआ है। देखते भी हैं यह आत्मा अपने तख्त पर बैठी है। अकालमूर्त आत्मा का यह तखत है। सिक्ख लोग अकालतखत कहते हैं ना। वहां जाय बैठते हैं। वास्तव में अकाल आत्मा है जो तखत पर बैठती है। मनुष्यों को तो जो आता कह देते हैं। अर्थ कुछ नहीं

समझते। तुम अर्थ समझ सकते हो। बाप तो सभी का एक ही है। बाप से ही बच्चों को वर्सा मिलता है। सतयुग में भी बाप से वर्सा मिलता है। वहां एडॉप्शन की बात नहीं। यहां बीमारियां आदि होती हैं तो बच्चा नहीं पैदा होता है। फिर एडाप्ट करते हैं। वहां यह बातें नहीं होतीं । कायदे सिरे बच्चे को वर्सा मिलना ही है। यह है बेहद का बाबा। बाप अर्थात जिससे जन्म मिला। यहां तुमको जन्म मिला है ना। यह है मरजीवा। इस बाप के तुम बने तो उनसे बुद्धियोग तोड़ इनसे जोड़ना होता है। धनवान बाप का बच्चा कब गरीब की एडॉप्शन थोड़े ही कबूल करेगा। यहां बच्चे जानते हैं बाप के बनने से विश्व की बादशाही मिलती है तो जरूर बाप पावन भी बनावेंगे। बुलाते भी इसलिए हैं। पावन दुनियां में राजाई बाकी...है शांतिधाम। उसका कोई वर्णन नहीं है। कर्मइन्द्रियां ही नहीं जो पार्ट बजे। आत्माएं तैयार रहती हैं हमारा टाइम आवे तो जाकर पार्ट बजावें। तो अभी बाप कहते हैं सभी मनुष्य मात्र को पवित्र बन जाना है। पतित तो कोई जा नहीं सकते। हम सभी को ले जावेंगे। क्यों2 पार्ट चलना है सो आगे चलकर देखेंगे। मूल बात है रास्ता बताना। अंधों की लाठी बनना है। तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। ऐसे नहीं कि यहां कोई तीसरा नेत्र निकल जाता है। यह बुद्धि का नेत्र है। आत्मा को ज्ञान मिला है। संगम पर तुम पढ़ते हो और पद नई दुनियां में पाते हो। बाकी सभी आत्माएं चली जावेंगी वापस मुक्तिधाम। समझाने की तुम कोशिश करते रहते हो। विलायत से आते रहते हैं। हो सकता है कोई समझ ले कि भगवान आया है राजयोग सिखलाने तो आवाज़ फैल जावेगा। विवके कहते हैं ढेर के ढेर आवेंगे। क्यू लग जावेगी। क्या होता है सो तो आगे चलकर देखेंगे। बाबा भी कहां जंगल में चले। कुछ मनुष्यों की समझ आ जाये फिर चलना भी अच्छा है। अभी तो अच्छा नहीं लगता है। दिन–प्रतिदिन हंगामा जास्ती होता जाता है। कामेषु,क्रोधेषु हैं ना। कहेंगे यह वही दादा है लगाओ पत्थर। बाबा ने भी कहा है अभी बाहर जाकर क्या करेंगे? फादर शोज सन। बच्चों का काम है औरों को समझाना। बाबा ने कहा भी उस समय है जबकि इंदिरा गांधी के नाक को चोट लगी। कहां तुम्हारा नाक खराब होगा तो हमको थोड़े ही कुछ है। तो हमने कहा अच्छा ठीक है। जनावर लोग हैं ना। आग लगाते रहते हैं, मारते रहते हैं। मोटर में भी कितने एक्सीडेंट हो जाते हैं। इसलिए मोटर का तो नाम भी न लो। तुम कहां बाहर जाओ ही नहीं। राय देते हैं अभी बाहर निकलना अच्छा नहीं है। तकलीफ तुमको ही होगी। तो अभी बच्चों को यह बेहद का धंध करना है। सभी को पैगाम देना है। बोले हमको शांति चाहिए तो इस चित्र के सामने कर दो। इनके राज्य में विश्व में शांति थी। अभी तो अशांति ही है। वहां तो रावण राज्य ही नही तो विकार की बात हो कैसे सकती? यह तो भक्ति मार्ग के शास्त्रों में बकवाद लिखी है। तो अभी हम यह राज्य स्थान कर रहे हैं। विश्व में शांति तो जरूर कोई होना चाहिए ना। आकाश तत्व खाली थोड़े ही होता है। आकाश में विश्व है। अभी तो बहुत बड़ी है। उस समय छोटी थी। पवित्रता ,सुख–शांति सब था। अभी इस रामराज्य में चलना है तो बैठो हम तुमको समझावें। शांतिधाम तो है मूलवतन, जहां आत्माएं रहती हैं फिर विश्व में शांति–सुख है सतयुग में। कितना सहज है। बाप की नज़र तो बेहद में जाती है। इतने सभी आत्माओं को ले जाना है। चिल्लाते रहते हैं। साहुकार नहीं चिल्लाते हैं तो वहां उनको पाई–पैसे का पद मिल जावेगा। शंकराचार्य क्या बनेंगे? पिछाड़ी में तमोप्रधान समय में ही आवेंगे। जो अच्छा पहले नम्बर वाला शंकराचार्य होगा वह थोड़े ही भक्ति करता होगा। यह तो भक्ति करते हैं। पहले गवर्मेंट सर्वेंट था। अभी गद्दी मिली हुई है। तुम लिख सकते हो श्री2 108जगदगुरू, पूज्य। फिर पूजा कैसे करते हो?100/200 चिट्ठियां जानी चाहिए। कल्याण तो करना है ना। नई दुनियां में सब पूज्य होते हैं। यहां है पुजारी। पुजारी दुर्गति को, पूज्य सदगति को पाते हैं। युक्ति से चुनरी पहननी चाहिए। इसमें डरने की बात नहीं। कोई से पूछ सकते हो तुमको क्या चाहिए? तुम अथॉर्टी हो ना। अच्छा ,गुडमार्निंग।